Q. 1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका पर प्रकाश डालें?

Ans:- 1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति में फ्रांस के दार्शनिकों की भूमिका अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रही है। पुनर्जागरण आन्दोलन ने फ्रांस में जागृति उत्पन्न कर दी थी। अनेक विद्वान तथा लेखक फ्रांस में जन्म ले चुके थे। इन विद्वानों का प्रभाव मध्यम वर्ग पर सर्वाधिक हुआ। यह वर्ग राजनीति में भाग लेने की तीव्र इच्छा रखता था, इस इच्छा को बढ़ाने में दार्शनिकों का विशेष हाथ था। "चैटब्रियाँड के अनुसार, "भौतिक कठिनाइयों तथा बौद्धिक उफान के संयोग के कारण ही फ्रांस की क्रांति हुई।" इस संदर्भ "केटलबी" ने लिखा है, "लेखक फ्रांसीसी समाज के असंतोष को उभार रहे थे। वे जनता को प्रेरणा दे रहे थे, उसके असंतोष को उभार रहे थे... उन्होंने फ्रांस की संस्थाओं के खोखलेपन को अनेक तरह से प्रकट कर दिया"।

मान्टेस्क्यू, वाल्टेयर और रूसो इस युग के तीन प्रमुख विद्वान थे। मान्टेस्क्यू एक प्रसिद्ध वकील था। वह अत्यन्त विद्वान और गम्भीर, पैनी बुद्धि वाला विद्यार्थी रहा था। उसकी लेखन-शैली अत्यन्त तीखी और प्रभावशाली थी। उनके लेख युक्ति-संगत, वैज्ञानिक और मध्यम वर्ग के होते थे। उसने एक दार्शनिक आन्दोलन प्रारंभ किया और समालोचना के व्यंग-वाण छोड़े जिन्होंने फ्रांस के पुराने राज्य की जड़ें हिला दी। वह संवैधानिक शासन पद्धति और कानून के सर्वोच्च सत्ता के पक्ष में था। मांटेस्क्यू ने सरकार को चलाने वाले और नियमित करने वाले कानूनों और रीति-रिवाजों का विश्लेषण किया और इस प्रकार फ्रांस की पुरानी संस्थाओं के प्रति अन्धविश्वास को समाप्त किया।

वाल्टेयर ने गद्य, पद्य, इतिहास नाटक आदि सभी प्रकार की रचनाओं में प्राचीन रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और कुप्रथाओं पर आक्रमण किया। वाल्टेयर की अतुल्य सर्वतो-मुखी प्रतिभा, उसका तीक्ष्ण सामान्य ज्ञान, उसकी युक्तिप्रिया

ने उसके देश के लोगों को प्रभावित किया। उसने इसे दार्शनिक आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। उसकी आलोचना का मुख्य केन्द्र फ्रांस का चर्च था। वह उसको एक ~~कुत्सित~~ कुत्सित संस्था मानता था। उसने ईसाइयों की धार्मिक कट्टरता और धर्मान्धता की आलोचना की। वह धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। उसका मानना था, "क्योंकि हम सभी गलतियों और मूर्खता के शिकार हैं, इस लिए हमें आपस में एक दूसरे की मूर्खताओं के लिए एक दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए। अपने साहित्यिक गुणों और विशेषताओं के कारण वॉल्टेयर के लेख बहुत से लोगों के द्वारा पढ़े गये और इसमें आश्चर्य नहीं कि उसने युग में जनता को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

फ्रांस के दार्शनिकों में और विद्वानों में सबसे महत्वपूर्ण रूसो था। उसने जनता के हाथों में ~~राज्य~~ राज्य की सर्वोच्च सत्ता होने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति राज्य की सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति था। चूंकि राज्य की सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है इस लिए कोई भी राज्य या सरकार उसे जनता से छीन नहीं सकती। जनता को सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार है। रूसो ने तत्कालीन सभी संस्थाओं की ~~समालोचना~~ समालोचना की और उसकी नींव हिला दी। उसकी रचनाओं का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने जनता में स्वतंत्र होने के लिए उत्साह उत्पन्न किया। रूसो की ~~पुस्तक~~ पुस्तक "The Social Contract" ने क्रांति की सामग्री प्रदान कर के क्रांति की चिनगारी फूंकी। यह "जैकोबिन" पार्टी के लिए ईश्वर की आवाज बन गई और शैब्जबरी उस आवाज को जनता तक पहुंचाने के लिए धर्मोपदेशक बन गया। लार्ड मार्ले ने रूसो के प्रभाव का निम्न शब्दों में मूल्यांकन किया है, "सबसे पहली बात तो यह है कि रूसो ने वे शब्द कहे जिनका प्रभाव कभी समाप्त नहीं किया जा सकता और उसने ऐसी आशा पैदा कर दी जिसको मिटाया नहीं जा सकता

पहले तो उसने अपने पवित्र और सच्चे दृढ़ विश्वास से लोगों की तत्कालीन स्थिति की कुरीतियों के विरुद्ध भड़काया और मानवता के एक भारी भाग के लिए सभ्यता को तुच्छ सिद्ध कर दिया फिर उसने अपनी तीक्ष्ण वक्तृत्व शक्ति और दृढ़ ~~इच्छा~~ विश्वास के गुणों से, जो उसने लोगों की भारी संख्या में भी पैदा कर दिये थे, फ्रांस में उस मृत्यु जैसी जड़ता और सुस्ती से जो कि उस ~~समय~~ (फ्रांस) पर शीघ्रता से काबू पा रही थी, जगाने के लिए प्रचण्ड शक्ति पैदा कर दी।"

इन तीन दार्शनिक विद्वानों के साथ-साथ ही अन्य भी कई लेखकों ने जनता के सोचने के ढंग पर प्रभाव डाला। दिदरो के साइक्लोपीडिया का, जिसमें बहुत से लेखकों ने अपनी रचनाएं दी थी, का सम्पादन किया था। वह अपने आप को अभिव्यक्त करने में अलग जोशीला, तीक्ष्ण और विचार करने में अलग क्रियाशील था। "हेल्वेशियस" ने मनुष्य के विचारों और आचरण के स्वहित की भावना के द्वारा निश्चित किये जाने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। "हालबैक" ने राजाओं के दुर्गुणों और मनुष्यों की शोचनीय स्थिति की ओर संकेत किया। वह क्रांति का पक्षपाती था। उसके अनुसार, "धार्मिक और राजनीतिक भूलों ने ब्रह्माण्ड को आंसुओं के घर के रूप में परिणत कर दिया है।"

मैलेट के अनुसार, "इन क्रान्तिकारी लेखकों के द्वारा बोए गए बीज उपजाऊ भूमि पर पड़े। मेडलिन के अनुसार, "पहले से तैयार हथियारों को लोगों से चलवाने का काम दार्शनिकों ने किया।"

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारणों से क्रांति रूपी रेलगाड़ी को फ्रांस में ~~बारूद~~ बारूद से भरा गया और तीन घटनाओं ने उसमें चिनगारी उत्पन्न करने का कार्य किया — पहली घटना अमेरिका की बस्तियों का स्वतंत्र होना, दूसरी पेरिस की

संसद द्वारा स्टेट्स जनरल की माँग और तीसरी 1788-89 ई० के जाड़ों में फ्रांस में भयंकर अकाल का पड़ना था।

1789 ई० में क्रान्ति हो गई और राजा को ~~बन्दि~~ बन्दी बना लिया गया। 1793 ई० में राजा और रानी को मौत के घाट उतार दिया गया। राजवंशीय व्यक्तियों तथा दरबारियों की हत्या कर दी गयी तथा फ्रांस में प्रजातंत्र की स्थापना हो गई।